विषय - संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
तृतीय वर्ष, षष्ठपत्र

① संयोग - हलोऽनन्तराः संयोगः । 1।1।7
अर्थः- अज्भिरव्यवहिता हलः संयोगसंज्ञाः स्युः ।
यदि स्वर वर्ण का व्यवधान न हो तो दो या दो से अधिक व्यंजनों को संयोग कहते हैं।
उदा॰ - कर्ण - यहाँ रकार और णकार के बीच में कोई स्वर वर्ण नहीं आया है, अतः प्रकृतसूत्र से दोनों की 'संयोग' संज्ञा होगी। इसी प्रकार 'इन्द्र' में स्वर वर्ण का व्यवधान न होने से नकार, दकार और रकार की 'संयोग' संज्ञा होती है।

② उपधा - अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा । 1।1।65
अर्थः- अन्त्यादलः पूर्वो वर्ण उपधासंज्ञः स्यात् ।
अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।
यथा- 'राजन्' में अन्त्य अल् नकार है और उससे पूर्व वर्ण ह्रस्व अकार है, अतः उसकी 'उपधा' संज्ञा होगी।

③ प्रातिपदिक - अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् । 1।2।45
अर्थः- धातुं प्रत्ययं प्रत्ययान्तं च वर्जयित्वा अर्थवच्-छब्दस्वरूपं प्रातिपदिकसंज्ञं स्यात् ।
धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त को छोड़कर अन्य अर्थवान् (सार्थक) शब्दस्वरूप की 'प्रातिपदिक' संज्ञा होती है।
यथा - 'राम' शब्द न तो धातु है, न प्रत्यय और न प्रत्ययान्त ही। साथ ही यह शब्द अर्थवान् भी

IND CamScanner App

classmate
Date
Page

है, क्योंकि 'राम' शब्द का अर्थ है - दशरथ का पुत्र आदि। इस प्रकार 'राम' प्रातिपदिकसंज्ञक होगा।

कृत्तद्धित समासाश्च । 1|2|46

अर्थः- कृत्तद्धितान्तौ समासाश्च प्रातिपदिकसंज्ञाः स्युः। कृदन्त (जिसके अन्त में कृत् प्रत्यय हो), तद्धितान्त (जिसके अन्त में तद्धित प्रत्यय हो) और समास भी 'प्रातिपदिक' संज्ञक होते हैं।
यथा - 'पाचक', 'कारक' आदि कृदन्तों 'औपगव' आदि तद्धितान्तों और 'राजपुरुष' आदि समासों की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

(4) सार्वधातुक - तिङ् शित् सार्वधातुकम्। 3|4|113
अर्थः- तिङः शितश्च धात्वधिकारोक्ताः एतत्संज्ञाः स्युः।
धात्वधिकार में विहित तिङ् और शित् प्रत्ययों की 'सार्वधातुक' संज्ञा होती है।
उदा० - भू + तिप् में 'तिङ्' - तिप् सार्वधातुक है। तथा 'शप्' प्रत्यय 'शित्' प्रत्यय है।

डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

 IND CamScanner App